P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मानवीय संवेदनाओं का चितेरा : वान गॉग

सारांश

वान गॉग (1853–1890) के जीवन की समग्रता का जब हम अध्ययन करते है तो उसका जीवन इस लिहाज से किसी पेंटिग से कम नहीं लगता। वान गॉग के जीवन में अगर दुःख था तो उतना ही तीव्र उल्लास भी था जो अनेक प्रकार की विषमताओं का सामना करने के बाद पनपा था। आज कला की नीलामियों में रिकॉर्ड तोड़ दाम पाने वाले इस चित्रकार की अपने जीवन में सिर्फ एक पेंटिंग बिकी थी। वान गॉग ने कला के इतिहास का परिशीलन करके अपनी कला का ध्येय निश्चित नहीं किया, बल्कि पूर्ण मानवतावादी ध्येय से प्रेरित होकर उन्होंने कलानिर्मिति की। कला समीक्षक युइद के अनुसार – "वान गॉग की कहानी सौन्दर्य – चकित आँख, तुलिका या मिश्रण फलक की कहानी नहीं है, बल्कि ऐसे अकेले दिल की कहानी है, जो अंधेरे बंदिवास में धड़क रहा था, जानता नहीं था वह क्यों दुःखी है, व क्या चाहता है।" मानवीय जीवन के सत्य दर्शन को ही वान गॉग कला की आत्मा मानते थे।

बहरहाल वान गॉग का जीवन एक दुःखी जीवन की आदर्श कहानी थी। भोग – विलास के इत्तर वान गॉग ने मानवीय संवेदनाओं को उकेरा जो उनके दुःख, आलुभक्षी सरीखे चित्रों में दृष्टव्य हैं।

मुख्य शब्द : चितेरा, मानवीय संवेदना, सत्य,दर्शन, दुःखी जीवन, आलुभक्षी।

राजेन्द्र प्रसाद
सहायक आचार्य,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

प्रस्तावना

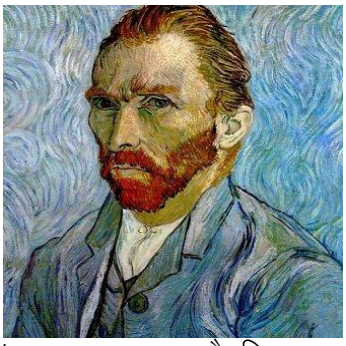

कला 'अनादि' का एक तसव्वुर है जिसका ताल्लुक उस जमीन से होना लाज़िम है जिसमें उसका जन्म हो।[1] इस लिहाज से अगर देखा जाये तो अपनी समग्रता में वान गॉग (1853–1890) का जीवन उसकी किसी पैंटिंग जैसा ही दिखता है, जिसमें स्थापित मान्यताओं के खिलाफ विरोधाभासों का एक अजीब आकर्षक और चौंका देने वाला मिश्रण दृष्टिगोचर होता है। उसके जीवन में अगर दुःख था तो उतना ही तीव्र उल्लास भी था जो अनेक प्रकार की विषमताओं का सामना करने के बाद पनपा था, उसमें अगर उपेक्षा की नितांत निजी पीड़ा थी तो उतनी ही विशाल सहृदयता भी थी जो दूसरों की पीड़ा को भी अपनाने की इच्छा जगाती है। कलाकारों में पाया जाने वाला 'बिखराव' वान गॉग के जीवन में भी कम नहीं था, मगर इसके साथ ही उसमें खास किस्म का 'ऑर्डर' भी था, जिसने ताजिंदगी उसे उसके पहले प्यार यानि पेंटिंग से बांधे रखा, इन बातों के अलावा एक खास बात जो वान गॉग के जीवन में थी वह जीवन के प्रति उसकी ईमानदारी और आस्था थी। बिना किसी लाग–लपेट और समझौते के व्यतीत किए इस जीवन ने ही वान गॉग के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व को एक प्रेरक विराटता बख्शी है और यह ईमानदारी, आस्था... गौर से देखें तो...एक–एक ब्रश–स्ट्रोक के पीछे छिपी बेचैनी, अधीरता और सच्चाई में, उसने दुनिया को अपनी विरासत के रूप में सौंपी थी।[2]

बहरहाल आज कला की नीलामियों में रिकार्ड तोड़ दाम पाने वाले इस चित्रकार की अपने जीवन में सिर्फ एक पैंटिंग बिकी थी। वान गॉग की हर तरह से उपेक्षा हुई थी। उनकी कला पर सिर्फ एक महत्वपूर्ण लेख उनके जीवनकाल में लिखा गया था, पर अब वान गॉग पर अनेक फिल्में बन चुकी हैं, उपन्यास

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-10* June- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

और पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।वान गॉग के संघर्ष में सिर्फ उनके भाई थियो ही सहारा थे। थियो के नाम 1872 से 1890 तक लिखी वान गॉग की चिट्ठियाँ अब एक कालजयी पुस्तक में बदल चुकी हैं। वान गॉग अपने जीवन में न कभी प्रेम में सफल हो पाये थे और न ही नौकरी में। वान गॉग सामाजिक नहीं थे, वो तो केवल नीरस और उबड़–खाबड़ रास्ते के पथिक थे। वान गॉग के पिता ने एक पत्र में लिखा था, कि ''वह जीवन का कोई भी आनन्द नहीं जानता है, हमेशा सिर झुकाए चलता है और जान–बूझकर सबसे मुश्किल रास्ता चुनता है।''[3]

वानगॉग ने कला के इतिहास का परिशीलन करके अपनी कला का ध्येय निश्चित नहीं किया बल्कि पूर्ण मानवतावादी ध्येय से प्रेरित होकर उन्होंने कलानिर्मित की। उनके लिए कला एक साधन मात्र थी। उनकी कला के बारे में कलासमीक्षक युइद ने लिखा है ''उनकी कहानी सौन्दर्य–चकित आँख, तूलिका या मिश्रण–फलक की कहानी नहीं है, बल्कि एक ऐसे अकेले दिल की कहानी है जो अंधेरे बंदिवास में धड़क रहा था, जानता नहीं था कि वह क्यों दुःखी है, व क्या चाहता है।'' संसार में प्रेम व दुःख अभिन्न हैं। वान गॉग ने मानवता से अपार प्रेम किया व उसकी सेवा करना चाहा, किन्तु बदले में उनको कष्ट व मानसिक यातनाओं के अलावा कुछ नहीं मिला। वान गॉग का प्रेम स्वार्थी व भोगलोलुप नहीं था। वे संसार के प्राणीमात्र के दुःख को देख कर तड़पते थे तथा जानना चाहते कि क्या किया जाये जिससे इस दुःख का अन्त हो। वे अपनी आत्मा को सेवा की वेदी पर अर्पण करना चाहते थे। मानवता की सेवा के लिए उन्होंने अनेक प्रयत्न किये किन्तु भोलापन व निष्कपट–वृत्ति के कारण वे असफल हुए और उनके लिये कला ही एकमेव साधन रही जिसके द्वारा वे मानवता के प्रति अपनी सद्भावना को व्यक्त करके उसकी अप्रत्यक्ष सेवा कर सकते थे। मानव सेवा की उनकी उत्कंठा को समाज ने निर्दयता से ठुकरा दिया। दार्शनिक स्पाइनोजा के वचन, ''जो भगवान से प्यार करता है उसे यह आशा नहीं करनी चाहिए कि भगवान भी बदले में उससे प्यार करे'' की सत्यता को उन्होंने अनुभव किया।[4]

वान गॉग ने मानवीय सहृदयता में ही यथार्थ के दर्शन किए। उसने भी वस्तुओं के बाहरी रुपों के स्थान पर उनके आन्तरिक पक्षों को प्रस्तुत करने में आकृतियों को इतना विकृत किया कि उनमें सादृश्य समाप्त हो जाये और वे मिथ्या प्रतीत हो। मनोविकार, आवेश और सहानुभूति–वान गॉग इन सब को चित्रित करना चाहता था। कूर्बे ने जिन वस्तुओं को तिरस्कृत कर दिया था उन्हीं को वान गॉग ने अपना विषय बनाया, क्योंकि वान गॉग उन्हें बाहरी यथार्थ से अधिक सत्य मानता था। उसकी तूलिका की लय उसकी मानसिक हलचल को व्यक्त करती तथा आवेश के कारण उसकी आकृतियों में अपूर्व गति उत्पन्न हो गयी थी। उसके चित्रों में साइप्रस के वृक्ष आग की हरी–नीली लपटों के समान आकाश का चुम्बन करते थे। सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र घूमते हुए और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड गति करता हुआ अनुभव होता था। कलाकार ने भावों से भरे हुए अपने हृदय के प्रभाव से इस विश्व को एक नवीन अर्थ प्रदान किया है।[5]

चित्र संख्या–1 : ''दुःख''

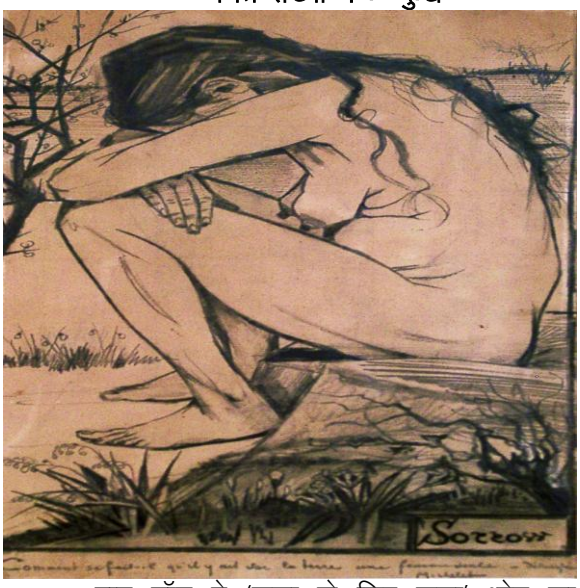

वान गॉग ने 'कला के लिए कला' ध्येय का विश्वास नहीं किया। कलाकृति में, वे कला के सौन्दर्यात्मक गुणों के विकास की अपेक्षा मानवीय दुःख, परिश्रम व पारमार्थिक आकांक्षाओं का भावनापूर्ण दर्शन कराना चाहते थे।[6] लिहाजा बोरिनाज में उनकी कला का सत्य अर्थ में आरम्भ हुआ। वे गरीबों की सेवा करते व उनके परिश्रम व दुःखी जीवन के चित्र खींचते व कहतेकि– ''ईसा सबसे महान चित्रकार थे''। अब वान गॉग की धार्मिक आकांक्षाओं व कलात्मक सहज–प्रवृत्ति के बीच द्वंद्व शुरू हुआ। उन्होंने अपने भाई थियो को लिखा – ''पाँच साल से मैं इधर–उधर घूम रहा हूँ, मैं चाहता हूँ कि मेरे जीवन का कुछ सदुपयोग हो। मेरे अन्तर्गत कोई प्रेरणा मुझे परेशान कर रही है। मैं नहीं जानता कि वह क्या है।'' उसके बाद उन्होंने फिर दूसरे पत्र में लिखा – ''कुछ भी हो मैं फिर हाथ में पेन्सिल लेकर चित्रण करूँगा जो मैंने निराश होकर छोड़ दिया था।'' एट्टेन जाकर वे थियो से मिले जहाँ उन्होंने आर्थिक सहायता करने का वचन दिया। अब वान गॉग के तपस्यापूर्ण जीवन का आरम्भ हुआ। कला के अध्ययन हेतु वे हेग जाकर चित्रकार आंटोन मॉव, के पास दो वर्ष तक रहे। यहाँ के अध्ययन से वे खुश नहीं थे। वे संग्रहालयों में जाकर रेम्ब्रां के चित्रों का अध्ययन करते। अब वे चित्र के धार्मिक या सामाजिक महत्व के अतिरिक्त उसके कलात्मक गुणों की ओर भी ध्यान देने लगे। अपनी अल्प आमदनी से थियो उनको जो कुछ पैसा भेजते थे वे वान गॉग चित्रकारी में लगा देते व पूरे समय चित्रकारी में व्यस्त रहते। इस काल के उनके चित्र, चित्रकार मिले के समान अंकनपद्धति में स्वच्छंद, सरल व प्रभाव में सामर्थ्यवादी हैं। 1880 से 1886 तक के चित्रों के विषय पूर्णतया मानवतावादी दृष्टिकोण लिये हुए हैं, जैसे – खान या खेत के मजदूरों के कष्टमय जीवन, अनाथालयों, गरीब बस्तियों एवं रास्तों के दृश्य उनके मुख्य विषय रहे हैं। वे कोयले या क्रेयॉन से रेखांकन करते व डच चित्रकारों के समान भूरे, काले एवं गहरे रंगों का अधिक प्रयोग करते थे, जिससे चित्र में दुःख व निराशा के भाव प्रतीत हो। वे गाँव के मजदूरों में

घूमते, उनसे बातें करते व कभी घास पर ही सो जाते। ठीक इसी समय उनकी धार्मिक व परोपकारी वृति ने फिर उछाल खायी। उनका सियन नाम की स्त्री से परिचय हुआ, जिसने अब तक की जिन्दगी वेश्यावृत्ति में गँवायी थी तथा जिसकी शारीरिक व मानसिक अधोगति पूरी तरह हो चुकी थी। वान गॉग उस गर्भवती स्त्री व उसके बच्चों को घर ले आये और उसका व्यक्ति चित्र बनाया। उस स्त्री का 'दुःख' शीर्षक (चित्र संख्या–1) का रेखाचित्र प्रसिद्ध है, जो उसके शारीरिक व मानसिकपतन का परिणामकारक चित्रण है। यह चित्र उस स्त्री के बारे में उनकी क्या धारणा थी यह उनके निम्न वाक्य से स्पष्ट होता है जो उन्होंने लेखक मिचेले से उद्धृत करके उस स्त्री के रेखाचित्र के नीचे लिखा था– ''दुनिया में दुःखी, अकेली परित्यक्ताएँ कैसी हो सकती हैं''।

चित्र संख्या–2: 'आलुभक्षी'

वान गॉग की कला के आरम्भिक काल को 'डच काल' (1880–1886) कहते हैं। इस काल का उनका चित्र 'आलुभक्षी' (चित्र संख्या–2) बहुत प्रसिद्ध है। इस सामर्थ्यपूर्ण चित्र में डच कला के समान गहरे, भूरे व हरे रंगों का प्राचुर्य है। इस चित्र के सम्बन्ध में वान गॉग ने थियो को पत्र में लिखा था – ''मैंने इस चित्र के द्वारा यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि ये जो निर्धन लोग, दीपक के प्रकाश में, हाथ डालकर आलू खा रहें हैं उन्हीं हाथों से धरती को खोदकर अपनी आजीविका चलाते हैं। सुशिक्षित लोगों से बिल्कुल भिन्न रहन–सहन का इसमें दर्शन है और मैं नहीं सोचता कि हर दर्शक इसको पसन्द करे। रूढ़िबद्ध पद्धति से इस चित्र को चिकना व आकर्षक बनाना अयोग्य होगा। कृषक जीवन के चित्र को सुगंध की क्या आवश्यकता है? ऐसे चित्र में यदि धुएँ, गोबर व खाद की गंद आती है तो यह उचित ही है''। उबड़–खाबड़ मानवाकृतियाँ, वक्रतापूर्ण रेखांकन, जोशीला तूलिका–संचालन एवं हल्के व गहरे रंगों का विरोधयुक्त प्रयोग से चित्र अभिव्यक्तिपूर्ण बन गया था।

मानवीय जीवन के सत्य दर्शन को ही वान गॉग कला की आत्मा मानते थे और इस वक्तव्य से उनके विचार महात्मा गांधी के सत्य व सौन्दर्य विषयक विचारों से मिलते हैं। गाँधीजी के अनुसार – ''सब सत्य..... अत्यन्त सुन्दर है। जब मनुष्य को सत्य में सौन्दर्य का साक्षात्कार होता है तब सच्ची कला की निर्मिति होती है।.. ... सच्ची कला आत्मिक अभिव्यक्ति है''। वान गॉग का कथन है – ''यदि आप विकास चाहते हैं तो आपको जमीन की गहराई में पहुँचना होगा''। इसी विचार से प्रेरित होकर उन्होंने गरीब कृषकों, मजदूरों, पीड़ित व पतित लोगों के जीवन को चित्रण के लिये चुनाव सत्य की खोज में उसका गहराई तक उत्खनन किया।''

जिस जमीन व सूर्य के प्यार से बेचैन होकर वे फ्रांस के दक्षिणी भाग में आये थे, उस जमीन को सूर्य के प्रखर प्रकाश में चित्रित करने का कार्य उन्होंने तन्मयता से शुरू किया।[7] वे अपना अस्तित्व भूल गये; दिनभर धूप में तपते व लगातार चित्र बनाते। जिस विनाशकारी आत्मसमर्पण वृत्ति से वान गॉग ने कलानिर्मिति की, उसके पीछे मनोवैज्ञानिक तत्व थे, तथा उसके परिणामस्वरूप वे अन्त में पागल हुए। चित्रकार क्ले ने इस वृत्ति को 'वान गॉग' की 'शोकान्तिका वृत्ति' नाम दिया था। वान गॉग ने एक प्रकार से सांसारिक दुःखों को आह्वान किया था – ''मुझे मेरी कला द्वारा मेरी आत्मा का साक्षात्कार हुआ हैं। अब मेरे शरीर का कुछ भी हो मुझे उसकी चिन्ता नहीं है।'' वान गॉग की कलानिर्मिति के अन्तर्गत उन्माद की अग्नि थी जो उनकी अस्तित्ववादी जीवन प्रेरणा को जला रही थी।

विंसेंट वान गॉग के समकालीन और वरिष्ठ कलाकार पिसारो ने कहा था, ''मुझे यह बात हमेशा पता थी कि वह या तो हम सबको पीछे छोड़ देगा या फिर एक दिन पागल हो जायेगा। पर मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि वह इन दोनों बातों को सच साबित कर देगा।'' वान गॉग भावना के अनुरूप रंगसंगति का प्रयोग करते; यह एक प्रकार से उनका रंगों का प्रतीकवाद था। 'मदिरागृह के अन्तर्गत दृश्य'के बारे में लिखा था– ''लाल व हरे रंगों से मैंने चित्र में मानवीय वासना को जागृत करने का प्रयत्न किया है। मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि मदिरागृह ऐसा स्थान है जहाँ आदमी स्वयं को भूल जाता है, गुनाह करता है व अपना सर्वनाश कर सकता है।''[8]

1886 से 1890 के बीच वान गॉग की कला में पर्याप्त परिपक्वता आ चुकी थी। बीच–बीच में वह मानसिक चिकित्सालय में भी रहे। फिर भी वान गॉग के कुछ अन्तिम चित्रों को छोड़कर, जिनमें चित्रों के वातावरण पर अंधेरा सा छाया हुआ प्रतीत होता है, इन सबके अलावा सम्पूर्ण कार्य में कहीं भी निराशा अथवा अवसाद नहीं मिलता। उसमें संघर्ष है, परिस्थितियों से जूझने की प्रवृति है और कहीं–कहीं स्नायविक आवेश भी हैं, किन्तु निराशा नहीं है।

कलात्मक विशुद्धता और यथार्थ के प्रति सजगता ने वान गॉग की कला को दिग्भ्रान्ति से सदैव बचाया। यद्यपि वह ईसाई धार्मिक था और उसी पद्धति से अपनी मुक्ति की कामना करता था किन्तु उसे मध्यकालीन संतों एवं जीवनगाथाओं के आधार पर धार्मिक चित्र बनाना बिल्कुल पसन्द नहीं था। वह दीन–हीन श्रमिकों को चित्रित करना ही मानवता की सच्ची सेवा मानता था।आर्ले के एक काफे पूल रूम का उसने जो चित्र बनाया है। उसके पीछे लाल–हरी सज्जित दीवारें हैं और नीचे पीला फर्श है। सम्पूर्ण वातावरण बड़ा चमकदार तथा आग के समान जलता हुआ है। मानों वह वहाँ के पाप और

अपराधों की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करना चाहता है। भावों को अंकित करने की दृष्टि से भी वह अप्रतिम है।

गॉगिन की भाँति वान गॉग आकृतियों को सरल करना चाहता था, जिससे कि वह कला के आधारभूत तत्वों की गहराई में उतर सके और सामान्य सत्य को प्रस्तुत कर सके। वह अपनी कला के द्वारा संगीत के समान विश्रान्ति प्रदान करना चाहता था। स्त्री–पुरूषों में वह उस शाश्वत गुण को चित्रित करने का इच्छुक था जिसे पुराने कलाकारों ने आभा–मण्डल के द्वारा व्यक्त किया था, जबकि वान गॉग ने इसे रंगों की चमक द्वारा प्रस्तुत करने की चेष्टा की थी।[9]

वान गॉग की कला जहाँ एक और विराट प्रकृति का प्रतिबिम्ब है, वहीं दूसरी ओर सम्पूर्ण मानवता की कला भी है। वान गॉग ने अपनी कला के स्पर्श से श्रमिकों, किसानों और दलितों को ग्राम्य देवताओं के स्तर पर स्थापित करके व्यापक आया दिया यही वजह रही की वान गॉग की कला जनसामान्य के साथ सीधे जुड़ी हुई है।[10]

साहित्यावलोकन

ऐलन बोवनेस 'द बुक ऑफ आर्ट' (इम्प्रेशिनिज्म एण्ड पोस्ट इम्प्रशनिज्म), वॉल्यूम–7, डिजाइन्ड़ एण्ड प्रोड्युस्ट बाय जॉर्ज रेनबर्ड़ लिमिटेड, लंदन 1965 पुस्तक में वान गॉग के जीवन परिचय, चित्र एवं शैली पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। वहीं ज्योतिष जोशी 'समकालीन कला' अंक–18, नवम्बर 2000, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली उक्त पुस्तक में कला एवं कलाकार के संबंधों पर चर्चा की गई, जो वान गॉग के कला जीवन पर सार्थक है।

अशोक पांडे (अनुवादक), स्टोन इरविंग (लेखक), 'लस्ट फॉर लाइफ', संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2006 पुस्तक में वान गॉग के पेंटिग के प्रति प्यार, दुःख एवं स्थापित मान्यताओं का दिग्दर्शन वान गॉग की पेंटिग की तरह दिखाई देता है।

र. वि. साखलकर, 'आधुनिक चित्रकला का इतिहास' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010 संदर्भित पुस्तक में वान गॉग के मानवतावादी ध्येय, प्राणीमात्र के दुःख तथा मानव सेवा का उत्कंठा को व्याख्यायित किया गया है। साथ ही कलासमीक्षक युइद की टिप्पणी – "उनकी (वान गॉग) की कहानी सौन्दर्य चकित आँख, तुलिका या मिश्रण फलक की कहानी नहीं है, बल्कि एक ऐसे अकेले दिल की कहानी है जो अंधेरे बंदिवास में धड़क रहा था, जानता नहीं था कि वह क्यों दुःखी है, व क्या चाहता है" वान गॉग की कला व जीवन पर स्टीक बैठती है।

गिर्राज किशोर अग्रवाल की पुस्तक 'आधुनिक चित्रकला', ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़, 2011 में वर्णित वान गॉग के दीन–हीन श्रमिकों के चित्रण, आकृतियों के सरलीकरण तथा रंगों की आभा द्वारा अंकित करने का प्रयास मानवतावादी भावों के लिहाज से अप्रतिम है।

अध्ययन का उद्देश्य

वान गॉग का समग्र जीवन, एक–एक ब्रश–स्ट्रोक के पीछे छिपी बेचेनी और अधीरता, सम्पूर्ण कृतीत्व में मानवीय संवेदनायें केन्द्र मे रही है। वान गॉग ने मानवता से अपार प्रेम किया व उसकी सेवा करनी चाही, किन्तु बदले में उनको कष्ट व मानसिक यातनाओं के अलावा कुछ नहीं मिला। वे अपनी आत्मा को सेवा की वेदी पर अर्पण करना चाहते थे।

उक्त अध्ययन द्वारा वान गॉग की निष्कपटवृत्ति, मानवतावादी ध्येय तथा सच्ची कलात्मक अभिव्यक्ति जो चित्रकला विद्यार्थियों, शोधार्थियों, कला विद्वतजनों एवं कला रसिकों के लिए लूंठी–अलूंठी है, तक इसका विस्तार हो तभी उक्त अध्ययन की सार्थकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः वान गॉग का जीवन एक दुःखी जीवन की आदर्श कहानी थी जो आधुनिक कलाकारों के लिए हमेशा से ही प्रेरक रही है। भोग–विलास से इत्तर वान गॉग ने मानवीय संवेदनाओं को उकेरा। आज भी वान गॉग के चित्रों में एक खास किस्म की तड़प देखी जा सकती है, जिसका ताना–बाना मानवीय दुःख–दर्द और संवेदनाओं के इर्द–गिर्द ही बुना लगता है। प्रारम्भ से अंत तक की कृतियों को देखने मात्र से यह बात और परिपक्व हो जाती है कि मानवता के दिग्दर्शन हेतु वान गॉग ने अपना सम्पूर्ण जीवन बलिदान कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *जोशी, ज्योतिष, समकालीन कला, अंक 18, नवम्बर 2000, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृ. सं. 5.*
2. *पांडे, अशोक (अनुवादक), इरविंग,स्टोन (लेखक) : लस्ट फॉर लाइफ, संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2006, पृ. सं. 9*
3. *भारद्वाज, विनोद, वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ. सं. 52.*
4. *साखलकर, र.वि., आधुनिक चित्रकाल का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010, पृ. सं. 96–97.*
5. *अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक चित्रकला, ललित कला प्रकाशन,, अलीगढ़, 2011, पृ. सं. 91–92.*
6. *साखलकर, र.वि., आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010, पृ. सं. 97.*
7. *बोवनेस, ऐलन, 'द बुक ऑफ आर्ट' (इम्प्रेशिनिज्म एण्ड पोस्ट इम्प्रेशिनिज्म), वॉल्यूम–7, डिजाइन्ड एण्ड प्रोड्युस्ड बाय जॉर्ज रेनबर्ड लिमिटेड, लंदन, 1965, पृ. सं. 51–52.*
8. *साखलकर, र.वि., आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010, पृ. सं. 102–103.*
9. *अग्रवाल, गिर्राज किशोर, आधुनिक चित्रकला, ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़, 2011, पृ. सं. 94.*
10. *शुक्ला, डॉ0 अन्नपूर्णा, वानगों और निराला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2019, पृ0 सं0 129*